

DPN 6620

Title : स्तोत्र संग्रह STOTRA SANGRAHA

Run. No. 7354

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 15 X 6.4

Folios 10

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

१ इति श्री विष्णुद्विदिशनाम स्तोत्र समाप्त ॥

P.T. 0.

२. इति श्री सङ्कलाचाज्ये विलंघित दिव्याष्टकं समाप्तः
३. इति श्री गुलकालिका वज्रजोगिनी वरनाम भुजंगस्तोत्रं समाप्त ॥
४. इति श्री ३ मुक्तिपद पाथिवे रत्नपंचासत् व(ज्र) जोगिनि की ६ अवतार
स्तोत्रं समाप्त ॥
५. इति श्री सवा पशु मगंरां स्तओ स्तोत्र समाप्त ॥
६. इति श्री शिवस्य द्वादशनाम स्तोत्रं समाप्त ॥
७. इति श्री प्रम पुराणे आदिष्टे द्वा (६) स नाम स्तोत्रं समाप्त ॥
८. इति श्री गूपति स्तोत्रं समाप्त ॥

॥ १ ॥

अथ मयस हस ह लजसुयं न ह्यमस हसदास्य हतं प्राप्तिमानवपुर्तु
मासी मावासी दस्य विषत ॥ संख्या का लप ॥ यलुस वपायं पुमं य
न स वपायं विषु द्वाभो विषु नाकं स गच्छति ॥ ॐ ति श्री विषु द्वा दसनाम
स्तुतसमाफा ॥ ॥ गुरु ॥ १६ नमोऽग्री वदिका दय ॥ ननाता नमाता नवयुन
दाता नयुन नपुत्री नदता नरका ॥ नजाया नवर्त्तन हर्त्ति मम वागति ॥ ॥
वुमिका रवानि ॥ १ ॥ नजानामिदाने नवधनमान नौ जानामि मनु नवसा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

स्वमतिस्त्वं दुःशकारं वानि ॥ ७ ॥ प्रथमं लघुसंज्ञं तसंगलसंदि तसंनिधि
 सति सिसंवेन वानजानामिल तसल तगतिस्त्वं मतिस्त्वं दुःशकारं वानि ॥ ८ ॥
 विवादी विरवा दपुं वा दपुं वा स जल वानल पर्वत स तु मध्य जल स न न्यसदा
 माय वाहि गतिस्त्वं मतिस्त्वं दुःशकारं वाहि ॥ ९ ॥ अनाये दनि डा जलो ना गे
 प्रका मला क्रि नदि त सदा जा श्वर का विपति प्रविष्टि स न न सदा ह गति
 स्वमतिस्त्वं दुःशकारं वानि ॥ १० ॥ यद्द प र्पति यद्द ह को को उभ त सम्य

यस्मै वति स्तुल पुं जामान निया नृपा ना व द न जन र का र का र गि क वि द
 सक न तु व न मा त तु दि ला न म रु ॥ ११ ॥ वृति श्री सुक ला वा अ विल वि त दि
 या छ क समा फ ४ ॥ १२ ॥ उ न म ४ श्री व दि का द र्ध न मा ४ पु व रु वा द द न ता
 मि मि द्रु ख द्रु स्य र व ल दं मि सं ला त नि रु न यी या ज ग धू लं द ला त रु धू मा न ला
 म रु धि सि डि दाय कं नि व च नि क ति सु स द व गु द्य का ति कां ॥ १३ ॥ पा क क
 ट का ति का ती मि द्रु ख द्रु स्य र व ल धू म गी स नृ प ४ ति डा ज पु रु प्र द र्ध का ना न

गताजमानिनिमहप्रापवासिनिउक्ताविष्णुविनिनमामिद्यावजजागिनि॥
 २॥ ॐ सर्वं लुनिसुतुमनिजातिउग्रपिनिगन्तुनटकागदावर्तिनिव
 र्णवर्णसनालीकांनिववर्णिसुसहृदवयुक्कांनिर्का॥३॥ ॐ वयुक्स्त
 वकिन्पर्वजगतमावर्णिसिमापनासनासनातमज्जतमन्पिनि
 हजावराहकर्मकनमानिनीवजजागिनि॥४॥ ॐ दसदसदिर्दि
 वदावसुपतस्तदं कुजकिनिगन्तुसकाञ्जलठकुहामेनृत्य

मान् ॐ वदिकपालिकाणिवचलिकलिसुसहृदवयुक्कांनि
 की॥५॥ ॐ मूलचक्रवासिनिमहप्रापगुणमिनिविन्दुह
 सीरुनाविनासग्राहकालिनिसीरुसकिविर्जमनुमनुनक
 चित्तिनिरुजामराहकर्मकनमानिनीवजजागिनि॥
 ॥६॥ ॐ निरुमुमुमुवमुमेमुलठविर्जरुक्कनिनमिनमना
 निवतनमुमात्रपालिनिस्मैसेकाललुरुकोत्संगकामयईप

१२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

पार्थिवदिविलज्जिकाजगिनि॥६॥गुपि०मिनाक्रिदवि,वज्रहृदाजगिनि॥७॥क
दात्रपि०,कदालसूत्रीदवि,मृगजगिनि॥८॥चतुष्त्रयपि०सिद्धिकात्रिदविसिद्धाज
गिनि॥९॥श्रीपि०हृदाक्रिदवि,हृदाजगिनि॥१०॥कवित्रयपि०,कवीलादवि,श्वरा
क्रिजगिनि॥११॥जार्थवत्रयपि०,जार्थपाजगिनि॥१२॥दविकालाम्खिजगिनि॥१३॥मा
त्रवपि०मालाकात्रिदवि,कलात्रीजगिनि॥१४॥कृष्णलोककपि०,सूक्ष्मकात्रि
दवि,मधुकर्णजगिनि॥१५॥दविकाटपि०हृदाकात्रिदविलूत्रिताजगिनि॥१६॥श्वक

र्मुपि०हृदविदवि,कज्ज्याजगिनि॥१७॥मात्रतश्चत्रयपि०,शालसूत्रिदवि,पिंगराज
गिनि॥१८॥जृहृदासपि०,मन्त्रीविकादवि,सूखधलाजगिनि॥१९॥वित्रयपि०,हृदवच
सूत्रिदवि,हृदवनामाजगिनि॥२०॥नाजगृहपि०,नाजनाजश्चत्रिदवि,उतकाम्
खिजगिनि॥२१॥महायथपि०,प्रचतुर्वन्तिकादवि,लन्काजगिनि॥२२॥कात्राष्ट
पि०,महालक्ष्मीदवि,सूत्रदाजगिनि॥२३॥कष्टत्रयपि०,पुष्पाक्रिदवि,नकर्षाजगिनि
॥२४॥जकार्तश्चत्रयपि०,मात्रीकादवि,पुष्पदन्त्रीजगिनि॥२५॥जयनिपुत्रपि०,ज
यतिदवि,स्वश्चत्रिदवि,जगिनि॥२६॥उर्ध्वयनिष्टत्रयपि०,महाकालसूत्रिदविलल

जिह्वा आगिनि॥ वनिष्ठप्रपि० लू वनिष्ठप्रपि० दवि विग्रावना आगिनि॥ १०॥ किनी
 काप्रलपि० पुग्गद्या दविकलक्षिनि आगिनि॥ हलीनाप्रलपि० नद्यध्वनि दवि कान
 लाकि आगिनि॥ १६॥ उदुली लपि० विमना दवि पिंगनाकि आगिनि॥ पुयागपि० लु
 दनि दवि लिघु वग आगिनि॥ १२॥ निहानपि० र्दिक स्वनि दवि र्दिकालि
 नि आगिनि॥ मायाप्रपि० माया दवि ध्रुवा आगिनि॥ २०॥ म४ नागिनि पि० मा
 नि का दवि काकिना आगिनि॥ मलयागिनि पि० वज्र ध्वनि दवि कानना आगि
 नि॥ २१॥ ग्रीष्मलपि० उमा दवि जल दकता आगिनि॥ म३ गिनि पि० पुं शुभ्र द

॥ शुभ्र ॥

नि दाव कलाला आगिनि॥ २२॥ महदुपि० लू द्वाकि दाव उ दगमान आगिनि॥
 वामनप्रपि० काम स्थनि दवि र्दुष्पु आगिनि॥ २३॥ हिर्नद्यप्रपि० नवलसुनी
 दवि प्रनिष्ठा आगिनि॥ मलालक्ष्मी प्रपि० कमनाकि दवि दिगम्बनि आगि
 नि॥ २४॥ उद्यानापि० तीप्रनध्वनि दवि स्फासदनि आगिनि॥ क्वायाकृति पि० कृत्तु स्वनि द
 वि माया आगिनि॥ र्वकथपि० ग्रीष्म दवि स्थपानि नि आगिनि॥ २५॥ उदिसंसा नम व जपु
 नुस्वायि न कपक्षसपि० नामसुनि थ॥ सप्रुस्व न कायिक वा वि कुमात्र ग्री क ऊपापष्ठिला सकन
 पापविधं स र्दया वृवसीस वना कागिना॥ २६॥ उदिति ग्रीष्म की प द पापि व न कपक्षस द्रव आ

॥ शुभ्र ॥

बाहुः वगमक, दंत, तं बाहु खलुषि तरिम मशी, वृक्षग्न न न वा ह्रु विद्यादिमाना ॥ ग्रीहि
 मत्राश वनूवनाय सदाहिमा नायत दवपः ३॥ ॐ नूस्तरिमत्राजः याः कथामंगन दा
 तत्रयामि उग्राग्री कास्वामि पत्रमस्वते श्रितिमत्राश न मस्व ॥ ३ ॥ पितृजनमहादय
 सर्वनिस्त्रगत वृक्षग्न न नृद्वः जनाद्याताकिमहा वृक्षत माकि विनना महात्रिपः स्वय
 याशु सत्रितरिमस्व मद्य तरिमक न वीत्रे नापल न देशी उर्ज वनस्व संपन नस्व न
 श्रितिमत्राश न मस्व ॥ ४ ॥ दंतसा इद्र माहिरंग वा वृक्षग्न न मस्व न कति विवो न

२३

१२
 रयविद्याहितायामदातुद्याहिताया कति कृत्यावन्तु नारकार्यसुखं वनवा
 क्षयसुखं वसं मरुमाहाः शिरिमनाशनमस्तु ॥ १॥ तैसुतलिम दवायगदाहस्त
 माहवेनविनाततगस्तविलेवित्रकिं कमानेनसुवव केनि नवसप्रवित्रवृसा
 सेनवद्व ज्ञासपासपनिः वासनेत्वापिस्त्रावसाक के सति दुत्पति दविर्तना
 कसगतं सुदति शिरव्ये व्यापिर्त व्यापुत्पत्य कत्र कार्य वन्यषुजातानस
 वीवास्यानिवासनेच्छरुतनरुतनरुतमहापियं संग्राम्यगमनवि लुगदा
 कप कत्रनिपुत्रुनसुनसंदुःखं ज्यत्रावसदयकृ ग्रीत्वय (ग) क्रातिशीलिम

५
 नाशनमस्तु ॥ ४॥ गतातां गतपक्ति र्वगजवस्तु ग्रीना यतयधमहु वम्यनिरु
 वनदानावितोयकं हनमापमदवकार्य सिद्धिविनायकं संता (ग) रूपसंपन्न
 दहिमहिस्सखसंघं नैशीलिमनाशनमस्तु ॥ १॥ दुर्वजमाली कात्रायः कृष्टवध
 समानदुवधसासेन नरुन कदिकपात्रिकताथं उतमशीमाली कारनतमामि
 हा शिरिमनाशनमस्तु ॥ ६॥ शिवकृपयनिकं ध्वजवनकनसं याफ्रानमक
 शकृत्वं कृष्ट हसदक नेविसलि उरया दारिताया वर्धसंखगव कत्यासख

न विद्यादिन
 रात्रिमास ॥ १॥ कृष्टवध
 ॥ १॥

१०
 ५
 ॥ १॥

पृष्ठ ॥

एतः पानि खनिकुसुमाया वक्षति पमरापत्त्यासिता धाननला वा वमसिता धार
नामिने ननु गच्छामा वनि धा धुमान क ह्यु गत्य वय कृत्यापसुता र ऊः ह
न मता विरि कृत नुरुत्मा दुस्यति सिताना नो मना धनि न तप र क त्यासु म न
तति निषि ति ल्या यना सनः गमनं च न्यत्रा ए य क्रमा म वि ज ना य व द्यु य क्र
विता साय यून नाय गमन वयून नाय गमन श्च श्रि म ना इत म सु ॥ २ ॥
कृत्तु ध ज वा र प म ध ज व न क न स वा क्र न म कृ श कः वा ना हि प न कृ र म

ॐ

न कृत्तु वि य क्रिया य न सि

ति व न प र नः व ज ध गृ ति धा ति वृ द्धा ना पि ति द्वा स्य स न व न नि मि कं
द्व स्य ना स्य वि ना स्यः कृ द्वा स र्वा य सि धि वि म न सु र्म ग न वा द्वि स त्व न म
सु ॥ १० ॥ अं ति श्री स वा य शु भ र्ग ना म्ना सा गु स मा फ ॥ ७७ ॥ ॥
ॐ न मा णि सि वा य ॥ प्र थ मं हू म ह्य द व दि ति र्प य क्र ह स
न गृ टि य र्म क न ना र्म य र्प गृ ष व ध ज ॥ प र म कि टि वा स र्वा ष ष्म क मा
ग ना स न स फ र्म द व द व स्य ति ल्क कृ त था स ट र्म न व र्म र्वा य स त ना र्म द स र्म

ॐ न मा ग कृ ति श न्द्र ग वा
ॐ न मा ग कृ ति श न्द्र ग वा

ॐ न मा ग कृ ति श न्द्र ग वा

ॐ न मा ग कृ ति श न्द्र ग वा

10

5

का ३ क्रो मूलतयक ३

पातवतिप्रियातुडम्यं दसनामं दससि वम्यते नुनदादसनामानिनि
संघयपयसुक्रतग्वयकृतपुर्ववविस्मासपातकं च वसुनाप्यावखपांय
तिसुखपायवीमृकंसिम्भार्कसंगच्छटि ॥ ॐ ति श्रीसि वस्मद्वादसनामव
मंसमाफ ॥ ॥ ३ क्रो मूलतयक ३ ॥ १६ नमो ग्रीसूर्योयः जक्रु उ वा वपुथ
मलासक्रनामंदिनिर्वादि वाकसंतिनियटिमिलाद्व वक्रुपुर्पा कवक्राख
॥ पवपलासुननामं सरसलागुवषषुमं मा तं दसफमंतामं ज्वादि तं वम

नमः

पांटेमं ॥ नवमलविनामं व दसमं सुख उ व लुकादसह व दक द्वादसति न त
रुसनुनदादसनामानि तं त्रिका नर जय पय द्वा लस दहं क सु ट ह न दानि द्वा व ह
लप्रां व सु वति पं कृत स्नानं शु वला कख वा द नं पुला ल विष्णु नय क ज्यपरा
दह न लुपं नय नाथ न म सं ॥ ॐ ति श्री प्रमप्रा न ज्वादि दंताम सां संमाय
त ॥ ॥ १६ नमो ग्री गला सा लय ॥ गनपति व ह न व विष्णु ना ज वि ना उ क द विष्
गाम हा त ज म हा व न प्रा क्रम मा हा द य म हा का य उ क द न ग जा स नं ॥ १७ त व ह

दास ३

नमो दे ४ ॥

॥ ऐतिह्यं ॥

महादिपंतीनां गतानां च कुरुमानां समन्तं दक्षिणाफलसंस्कृतं पुन
 भादकपाकुर्यं वामदक्षिणविभक्तिं तातापकृषत्तं दं वतानां गंभानुलपितं
 नाह्नाज्ज्ञाप्रविंसतां गतानां विद्युवितासर्तं दवास्तनमनुक्रान्तां सिद्धिगं
 वमं दत्तं तलाकाविद्युफसर्तं नमस्तुतं ॥ ॐ तिग्मापतिमा
 सुसमाफा ॥ ॥ ॐ नमः ॥ गवतं वाञ्छु देवाय ॥ ज्ज्ञान उवाच ॥ यत्तु सुखांलिभ
 देवयद्यहं पापं ॥ इत्युत्तरादकुदिभनार्थं ॥ यत्तु यत्तु गीमाधवा ॥ गीतवानुवा
 ३

युक्तिं त्वनामसहस्रानि विज्ञापयन्मुपाधि वतानि नामानि वक्रामिषा दुपा
 पतमथ ॥ प्रथमं कुरुविद्याद्वितियं कसं वक्रामिषा तृतीयं प्रथमं नो
 कुरुपुर्णवामनस्तुतं ॥ पथमं वंदगलं ॥ षष्ठं तु मधुसूदनसफमं वासुद
 वाहिवानाहनामजातमी ॥ नवमं प्रभुनिका कुरुदसमं जनादनं कुरुम
 कादलीनामवा दसं शीवतं सुखा ॥ उता दसनामानि विष्णुका निसे वसं
 श्मार्थं प्रतप्यमुपलब्धं ॥ अथ नमस्तुतं कथादाय नतस्य